क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर.ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

अब भारत जागृत अवस्था की ओर

2 मार्च 2013 इलाहाबाद । महाकुम्भ क्षेत्र में मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग शिविर में अन्तर्राष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् ने स्पष्ट किया कि विश्व के सभी विद्वान और ज्ञानी लोग यह जानते हैं कि 24 तीर्थकर, महावीर स्वामी, महात्मा गौतम बुद्ध, मोजेस, प्रभु ईसा, कबीर साहब, नानक देव, संत रविदास, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द तथा योगिराज लाहिड़ी महाशय और उनके उन्नतशील शिष्यगण जो परमज्ञान को प्राप्त हो गये जैसे स्वामी श्री युक्तेश्वर गिरी, द्विशरीरी संत स्वामी प्रणवानन्द, श्री परमहंस योगानन्द आदि ने पूरी तरह से यह स्पष्ट कर दिया है कि केवल अनुभूतिजन्य सच्चा ज्ञान ही मानव के समस्त कष्टों को दूर कर सकता है और समाज को भयमुक्त कर सकता है । किसी भी तरह मार-पीटकर, लड़ाई-झगड़ा कर, किसी बुरे आदमी की हत्या कर समाज को बुराइयों और भय से मुक्त नहीं किया जा सकता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने आगे कहा कि एक समय था जब भारत में सत्य और अहिंसा का ज्ञान अपने चरमसीमा पर था । भारतदेश में सम्पूर्ण रचनाओं के सृजन, सुरक्षा और परिवर्तन के लिए जो विविध प्रकार की शिक्षाएँ उपलब्ध थीं, वे सत्य व अहिंसा के सिद्धान्त पर आधारित थीं । महान भारत का उच्च स्तर गिरने का मुख्य कारण यह है कि पूरे देश में भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण की घर-घर में पूजा होती थी परन्तु उनकी शिक्षाओं को पूरी तरह से गलत रूप में प्रस्तुत किया गया और विभिन्न तरीकों से यह सिद्ध करने का प्रयास किया गया कि भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण

स्वयं दुष्टों को दण्ड दिये और बहुत बड़ी लड़ाई करवाकर गलत लोगों को मरवा दिया । इस गलत संदेश की वजह से पूरे राष्ट्र में लड़ाई झगड़े का माहौल बढ़ गया । महाभारत की गलत व्याख्या होने से लोगों ने यह स्पष्ट अनुभव किया कि जिस घर में महाभारत रखा रहता है उस घर में लड़ाई-झगड़ा अवश्य होता है ।

अपार खुशी की बात है कि क्रियायोग के अभ्यास से अन्तरदृष्टि शीघ्रता से खुल जाती है और क्रियायोग अभ्यासी अतीत से पूरी तरह जुड़ जाता है और इस अवस्था में वह स्पष्ट रूप से जान लेता है कि भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण सत्य व अहिंसामय जीवन व्यतीत करने के लिए व्यापक तरीके से प्रशिक्षण दिये थे । भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण ने अपने जीवन काल में किसी का वध नहीं किया था और न दुष्टों को मरवाने के लिए किसी प्रकार की लड़ाई का आयोंजन किया । श्री रामचरितमानस, रामायण और महाभारत में जो लड़ाइयाँ दिखायी गयी हैं वह शास्त्रों की गलत व्याख्या है । जिस दिन श्रीरामचरितमानस, रामायण और महाभारत की अहिंसात्मक व्याख्या को अधिकांश लोग समझ जाएँगे उसी समय भारत अपने खोये हुए पूर्व गौरव को पुन: धारण कर पूरे विश्व में प्रेममय, सर्वशक्तिमान माँ के रूप में प्रकाशित होगा । स्वामी श्री योगी सत्यम् जी ने स्पष्ट किया कि श्री रामचरितमानस में वर्णित विभिन्न प्रसंग - बालि का वध, शूर्पनखा का नाक कटना, मेघनाद वध, रावण वध आदि ध्यान की विभिन्न अवस्था हैं । इसी प्रकार महाभारत में वर्णित विभिन्न प्रसंग - भीष्म पितामह का बाणशय्या पर शयन, द्रोणाचार्य वध, कर्ण वध, दुर्योधन वध आदि सम्पूर्ण घटनाएँ क्रियायोग ध्यान की विभिन्न अवस्थाएँ हैं जिनको पार करके साधक आत्मज्ञान की पूर्णता प्राप्त कर लेता है जहाँ वह अपने अमर, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान स्वरूप की अनुभूति कर लेता है ।

मुक्ति मार्ग पर स्थित क्रियायोग शिविर के भव्य पण्डाल में भारत के अनेक प्रदेशों से आये हुए भक्तों के साथ–साथ अमरीका, कनॉडा, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, पोलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक भारी संख्या में भाग लेकर शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा सायं 4:00 बजे से 7 बजे तक और रात्रि 11 बजे से 1 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बडे ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है ।

– योगमाता